

भाषा विकलांग बालक(Language Handicapped Child)

किन्हीं दो लोगों के बीच संचार का माध्यम भाषा ही होता है बगैर भाषा संचार संभव नहीं हो सकता । पर भाषा ऐसी होनी

चाहिए जो सब को आसानी से समझ में आए और ऐसी भाषा तो केवल मातृभाषा ही हो सकती है। बच्चे जिन विद्यालयों में पढ़ने जाते हैं वहां उनकी मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम होती है और बोली भी वही जाती है। जैसे उत्तर प्रदेश में बच्चे घर में हिंदी बोलना सीखते हैं और स्कूल में भी शिक्षण हिंदी भाषा में ही होता है।

इसी प्रकार मद्रास में जो बच्चे होते हैं तमिल भाषा सीखते हैं तो इस प्रकार अलग-अलग जगहों के बच्चे अलग-अलग भाषा सीखते हैं। तथा ऐसी व्यवस्था में बच्चों को किसी प्रकार के संचार से संबंधित असुविधा नहीं हो पाती है। तथा बच्चा अपने को मनोवैज्ञानिक तौर से भी सुरक्षित और प्रसन्न चित्त अनुभव करता है। मान लीजिए अगर किसी मद्रासी बच्चे को किसी ऐसे विद्यालय में जो कि उत्तर प्रदेश का है दाखिला देना पड़ता है जहां हिंदी द्वारा शिक्षण कार्य किया जाता है। तथा यहां सभी विद्यार्थी भी हिंदी ही बोलते हैं तो यहां उस मद्रासी बच्चों को तमाम समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। यही स्थिति हिंदी भाषा बालकों को हिंदी भाषी राज्य से अन्य किसी राज्य के विद्यालय में दाखिला लेने पर पैदा हो सकती है ऐसे भाषा विकलांग बच्चों की शिक्षा व्यवस्था भी अलग-अलग होनी चाहिए और खास तरह की होनी चाहिए ताकि इनको समस्याओं का सामना ना करना पड़े।

भाषा विकलांगता प्रभाव-

- 1-दूसरों पर आश्रित रहने की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है।
- 2-अधिगम के लिए प्रेरणा का अभाव हो जाता है।
- 3-बच्चे का शिक्षा का स्तर भी नीचे गिरता जाता है।
- 4-कक्षा की परिस्थितियों से भग्रासा पैदा होने लगती है।
- 5-भाषा विकलांगता की वजह से बच्चा पाठ को सही तरह से समझ नहीं पाता।
- 6-अक्सर बच्चे बीच साल में ही विद्यालय छोड़ देते हैं।
- 7-बच्चा अपने आप को ही स्कूल में तिरस्कृत महसूस करने लगता है।
- 8-बच्चा नई भाषा को सीखने में अयोग्य हो जाता है।

भाषा संबंधी दोष से ग्रसित बच्चों के प्रकार-

- 1-व्याख्यान संबंधी दोष वाले बच्चे
- 2-उच्चारण संबंधी दोष वाले बच्चे
- 3-प्रवाहित संबंधी दोष वाले बच्चे
- 4-आवाज संबंधी दोष वाले बच्चे
- 5-गूंगे बालक

वाणी दोष वाले बच्चों के उपचार-

जहां तक भाषा की सार्थक और साफ अभिव्यक्ति की बात है तो यह वाक शुद्धता पर आधारित होती है। अतः ऊपर जो दोष भाषा संबंधी बताए गए हैं उनको निम्न प्रकार से कम किया जा सकता है।

1-बच्चों में उत्तम बोलने की आदतों को विकसित किया जाना चाहिए।

2-अध्यापकों को बच्चों का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए ।

3-अध्यापक बच्चों में ऐसी आस्था पैदा कर सकता है जिससे वह अपने कठिनाइयों को स्वयं पहचान सके।

4-सबसे मुख्य बात यह है कि अध्यापकों को स्वयं इस दृष्टि से उदाहरण पेश करना चाहिए।

5-शिक्षकों को बच्चों के दोषों पर ज्यादा बल नहीं देना चाहिए । बल्कि सही और संगत निदान का की मदद से दोष को पहचान कर उस दोस्त के अनुकूल अभ्यास करने का परामर्श देख सकते हैं।

भाषा संबंधी दोष वाले बच्चों की शिक्षा -

इसके लिए हमारी शिक्षा व्यवस्था में निम्न प्रकार के प्रावधान हो सकते हैं।

1-पहचान

2-शिक्षण उपागम

3-दैभाषिक योजनाएं

4-अध्यापक

5-शिक्षण सहायक

6-कौशल विकास

7-पाठ्यक्रम

8-व्यवहार रूपांतरण तकनीकी

9-पारगमन

10-अन्य शिक्षण तकनीकी

11-श्रव्य दृश्य सामग्री